The original story by Gulfaam khan
April 7, 2004.

लेडी डॉक्टर - *गुलफ़ाम ख़ान*

उस लेडी डॉक्टर का नाम ऊषा त्रिवेदी था. कुछ ही दिनों पहले उसने मेरी दुकान के सामने अपनी नई क्लिनिक खोली थी. पहले ही दिन जब उसने अपनी क्लिनिक का उदघाटन किया था, मैं उसे देखता ही रह गया था. यही हालत मुझ जैसे कुछ और हुस्न-परस्त लड़कों की थी. बड़ी ग़ज़ब की थी वो. उम्र यही कोई २७-२८ साल. उसने अपने आपको बहुत संभाल कर रखा हुआ था. रंग ऐसा जैसे दूध में किसी ने केसर मिला दिया हो. त्वचा बेदाग़ और बहुत ही स्मूद. आंखें झील की तरह गहरी और बड़ी बड़ी. वो अक्सर साड़ी पहनती थी, मगर कभी कभी जीन्स और शर्ट पहन कर भी आ जाती थी. तब उसके हुस्न का जलवा कुछ और ही होता था. किसी माहिर संग-तराश का शाहकार लगती थी वो तब.

उसके जिस्म का एक एक अंग सलीक़े से तराशा हुआ था. उसके सीने का उभरा हुआ भाग घमंड से हमेशा तना हुआ रहता था. उसके हिप इतने चुस्त और ख़ूबसूरत आकार लिए हुए थे, मानो क़ुदरत ने उन्हें बनाने के बाद अपने औज़ार तोड़ दिए हों.

जब वो चलती थी तो हवाओं की सांसें रुक जाती थीं. जब वो बोलती थी तो चिड़ियां चहचहाना भूल जाती थीं और जब वो नज़र भर कर किसी की तरफ़ देखती थी तो वक़्त थम जाता था.

सुबह ११ बजे वो अपना क्लिनिक खोलती थी और मैं अपनी दुकान सुबह दस बजे. एक घंटा मेरे लिए एक सदी के बराबर होता था. बस एक झलक पाने के लिए मैं एक सदी का इंतज़ार करता था. वो मेरे सामने से गुज़र कर क्लिनिक में चली जाती और फिर तीन घंटों के लिए ओझल हो जाती.

आख़िर ये कब तक चलेगा, मैंने सोचा.

और फिर एक दिन मैं उसके क्लिनिक में पहुंच गया. कुछ लोग अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे थे. मैं भी लाइन में बैठ गया.

जब मेरा नंबर आया तो कंपाउंडर ने मुझे अंदर उसके केबिन में जाने का इशारा किया. मैं धड़कते दिल के साथ अंदर गया.

वो मुझे देख कर प्रोफेशनलों के अंदाज़ में मुस्कुराई और सामने कुर्सी पर बैठने के लिए कहा.

‘‘ हां, कहो... क्या हुआ है ?’’ उसने मुझे ग़ौर से देखते हुए कहा.

मैंने सर झुका लिया और कुछ नहीं बोला.
वो आश्चर्य से मुझे देखने लगी. बोली... '' क्या बात है ?''
मैंने सर उठाया और कहा.... '' जी कुछ नहीं.''
''कुछ नहीं, तो .... ?''
'' जी, असल में कुछ हो गया है मुझे....''
''हां तो बोलो न क्या हुआ है... ?''
'' जी, कहते हुए शर्म आती है....''
वो मुस्कुराने लगी और बोली... '' समझ गई... देखो, मैं एक डॉक्टर हूं... मुझसे बिना शर्माए कहो कि क्या हुआ हो... बिलकुल बेझिझक हो कर बोलो...''

मैं यहां वहां देखने लगा तो वो फिर धीरे से मुस्कुराई और थोड़ा सा मेरे करीब आ गई.
'' क्या बात है... ? कोई गुप्त रोग तो नहीं...?''

'' नहीं, नहीं...'' मैं जल्दी से बोला... '' ऐसी बात नहीं है...''
'' तो फिर क्या बात है....? '' वो बाहर की तरफ़ देखते हुए बोली, कि कहीं कोई और पैशेन्ट तो नहीं है.
ख़ुशकिस्मती से बाहर कोई और पैशेन्ट नहीं था.

'' दरअसल मैडम... अ... डॉक्टर... मुझे... '' मैं फिर बोलते बोलते रुक गया.
'' देखो, जो भी बात हो, जल्दी से बता दो.... ऐसे ही घबराते रहोगे तो बात नहीं बनेगी...''

मैंने भी सोचा कि वाकई बात नहीं बनेगी.

मैंने पहले तो उसकी तरफ़ देखा, फिर दूसरी तरफ़ देखता हुआ बोला.... '' डॉक्टर मैं बहुत परेशान हूं.''

'' हूं...हूं...'' वो मुझे तसल्ली देने के अंदाज़ में बोली.

'' और परेशानी की वजह..... आप हैं...!''
'' व्हाट ???''
'' जी हां... ''
'' मैं ??? मतलब ???''
मैं फिर यहां वहां देखने लगा...
'' खुल कर कहो, क्या कहना चाहते हो ?''
मैंने फिर हिम्मत बांधी और बोला... '' जी देखिए वो सामने जो जनरल स्टोर है, मैं उसका मालिक हूं... आपने देखा होगा मुझे वहां....''
'' हां तो ?''
'' मैं हर रोज़ आपको ग्यारह बजे क्लिनिक आते देखता हूं....और जैसे ही आप नज़र आती हैं.....''

‘‘ हां बोलो… !’’
‘‘ जैसे ही आप नज़र आती हैं….और मैं आपको देखता हूं… ’’
‘‘ तो क्या होता है…’’ वो मुझे ध्यान से देखती हुई बोली.
‘‘ तो जी, वो मेरे शरीर का ये भाग …. यानी ये अंग… ’’ मैंने अपनी पैन्ट की ज़िप की तरफ़ इशारा करते हुए कहा…. ‘‘ तन जाता है !’’

वो झेंप कर दूसरी तरफ़ देखने लगी और फिर लड़खड़ाती हुई आवाज़ में बोली…‘‘कक्क…क्या मतलब??’’

‘‘ जी हां,’’ मैं बोला… ‘‘ ये जो … क्या कहते हैं इसे… पेनिस…. ये इतना तन जाता है कि मुझे तकलीफ़ होने लगती है और फिर जब तक आप यहां रहती हैं… यानी तीन-चार घंटों तक…. ये यूं ही तना रहता है.’’

‘‘ क्या बकवास है… ’’ वो फिर झेंप गई.

‘‘ मैं क्या करूं डॉक्टर…. ये तो अपने आप ही हो जाता है… और अब आप ही बताइए… इसमें मेरा क्या कुसूर है ?’’

उसकी समझ में नहीं आया कि वो क्या बोले….फिर मैं ही बोला.
‘‘ अगर ये हालत… पांच दस मिनट तक ही रहती तो कोई बात नहीं थी…. पर तीन चार घंटे… आप ही बताइए डॉक्टर… इट इज़ टू मच.’’

‘‘ तुम कहीं मुझे … मेरा मतलब है… तुम झूठ तो नहीं बोल रहे ?’’ वो शक भरी नज़रों से मुझे देखती हुई बोली.

‘‘ अब मैं क्या बोलूं डॉक्टर… देखिए इस वक़्त भी… ’’ मैं खड़ा हो गया और इशारे से अपनी फूली हुई पैन्ट की ज़िप की तरफ़ इशारा करते हुए बोला.

वो फिर झेंप कर यहां वहां देखने लगी. फिर कुछ देर बाद बोली.

‘‘ ठीक है… बैठ जाओ, पर तुमको इससे तकलीफ़ क्या है ?’’

‘‘ तकलीफ़ ही की तो बात है डॉक्टर. इतने सारे ग्राहक आते हैं दुकान में…. अब मैं उनके सामने इस हालत में कैसे डील कर सकता हूं… देखिए न… मेरा साइज़ भी काफ़ी बड़ा है…. नज़र वहां पहुंच ही जाती है.’’

‘‘ तो तुम…. इनशर्ट मत किया करो… ’’ वो अपने स्टेथिसकोप को यूं ही उठा कर दूसरी तरफ़ रखती हुई बोली.

‘‘ क्या बात करती हैं डॉक्टर.....ये तो कोई इलाज नहीं हुआ...मैं तो आपके पास इसलिए आया हूं कि आप मुझे कोई इलाज बताएं इसका.’’

‘‘ ये कोई बीमारी थोड़े ही हैं जो मैं तुम्हें इलाज बताऊं.... ’’

‘‘लेकिन मुझे इससे तकलीफ़ है डॉक्टर... ’’

‘‘ क्या तकलीफ़ है.... तीन चार घंटे बाद.... ’’ कहते कहते वो फिर झेंप गई.

‘‘ ठीक है डॉक्टर, तीन चार घंटे बाद ये शांत हो जाता है... लेकिन तीन चार घंटों तक ये तनी हुई चीज़ मुझे परेशान जो करती है.... उसका क्या?’’

‘‘ क्या परेशानी है... ये तो... इसमें मेरे खयाल से तो कोई परेशानी नहीं... ’’

‘‘ अरे डॉक्टर, ये इतना तन जाता है कि मुझे हलका हलका दर्द होने लगता है और अंडरवेयर की वजह से ऐसा लगता है जैसे कोई बुलबुल पिंजरे में तड़प रहा हो, छटपटा रहा हो....’’ मैं दुख भरे लहजे में बोला.

वो मुस्कुराने लगी और बोली.... ‘‘ तुम्हारा केस तो बड़ा अजीब है... ऐसा होना तो नहीं चाहिए...’’

‘‘ अब आप ही बताइए, मैं क्या करूं ?’’

‘‘ मैं तुम्हें एक डॉक्टर के पास रेफ़र करती हूं... वो सेक्सोलॉजिस्ट हैं....’’

‘‘ वो क्या करेंगे डॉक्टर ? मुझे कोई बीमारी थोड़े ही हैं.... जो वो...’’

‘‘ तो अब तुम ही बताओ इसमें मैं क्या कर सकती हूं... ’’

‘‘ आप डॉक्टर हैं, आप ही बताइए.... देखिए... अभी भी तना हुआ है और अब तो कुछ ज़्यादा ही तन गया है... आप सामने हैं न ....’’

‘‘ ऐसा होना तो नहीं चाहिए.... ऐसा कभी सुना नहीं मैंने... ’’ वो सोचते हुए बोली और फिर सहसा उसकी नज़र मेरी पेन्ट के निचले भाग पर चली गई और फिर जल्दी से दूसरी तरफ़ देखने लगी. कुछ देर ख़ामोशी रही और फिर मैं धीरे धीरे कराहने लगा. वो अजीब सी नज़रों से मुझे देखने लगी.

फिर मैंने कहा... ‘‘ डॉक्टर... क्या करूं ?’’

वो बेबसी से बोली…. ‘‘ क्या बताऊं ?’’

मैंने फिर दुख भरा लहजा अपनाया और बोला… ‘‘ कोई ऐसी दवा दीजिए न… जिससे मेरे लिंग… यानी मेरे पेनिस का साइज़ कम हो जाए….. ’’

उसके चेहरे पर फिर अजीब से भाव दिखाई दिए, बोली… ‘‘ ये तुम क्या कह रहे हो… लोग तो… ’’

‘‘ हां डॉक्टर, लोग तो साइज़ बड़ा करना चाहते हैं… लेकिन मैं साइज़ छोटा करना चाहता हूं… शायद इससे मेरी उलझन कम हो जाए…. मतलब ये कि अगर साइज़ छोटा हो जाएगा तो ये पेन्ट के अंदर आराम से रहेगा और लोगों की नज़रें भी नहीं पड़ेगी…’’

वो धीरे से सर झुका कर बोली… ‘‘ क्या…. क्या साइज़ है….उसका ?’’

‘‘ ग्यारह इंच डॉक्टर… ’’ मैंने कुछ यूं सरलता से कहा, जैसे ये कोई बड़ी बात न हो.

उसकी आंखें फट गईं और हैरत से मुंह खुल गया. ‘‘ क्या?… ग्यारह इंच???’’

‘‘ हां डॉक्टर… क्यों आपको इतनी हैरत क्यों हो रही है… ?’’

‘‘ आई कांट बिलीव इट !!!’’

मैंने आश्चर्य से कहा… ‘‘ ग्यारह इंच ज़्यादा होता है क्या डॉक्टर….? आम तौर पर क्या साइज़ होता है..?’’

‘‘ हां ?… आम तौर पर ??? …’’ वो बग़लें झांकने लगी और फिर बोली… ‘‘ आम तौर पर ६-७- ८ इंच.’’

‘‘ ओह गॉड ! ’’ मैं नकली हैरत से बोला… ‘‘ तो इसका मतलब है मेरा साइज़ एबनॉर्मल है !’’ मैं सर पकड़ कर बैठ गया.

उसकी समझ में भी नहीं आ रहा था कि वो क्या बोले.

फिर मैंने अपना सर उठाया और भर्राई हुई आवाज़ में बोला… ‘‘ डॉक्टर… अब मैं क्या करूं…?’’

‘‘ आई कांट बिलीव इट… ’’ वो धीरे से बड़बड़ाते हुए बोली…

‘‘ क्यों डॉक्टर… आख़िर क्यों आपको यक़ीन नहीं आ रहा है… आप चाहें तो ख़ुद देख सकती हैं… दिखाऊं ???’’

वो जल्दी से खड़ी हो गई और घबरा कर बोली…. ‘‘ अरे नहीं नहीं… यहां नहीं…’’ फिर जल्दी से संभल कर बोली…. ‘‘ मेरा मतलब है… ठीक है… मैं तुम्हारे लिए कुछ सोचती हूं…. अब तुम जाओ…’’

मैंने अपने चेहरे पर दुनिया जहान के ग़म उभार लिए और निराश सा हो कर बोला… ‘‘ अगर आप कुछ नहीं करेंगी… तो फिर मुझे ही कुछ करना होगा… ’’ मैं उठ गया और जाने के लिए दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा तो वो रुक रुक कर बोली… ‘‘ सुनो… तुम… तुम क्या करोगे ?’’

मैं बोला… ‘‘ किसी सर्जन के पास जा कर कटवा लूंगा..’’

‘‘ व्हाट ??? आर यू क्रेज़ी ? पागल हो गए हो क्या ?’’

मैं फिर कुर्सी पर बैठ गया और सर पकड़ कर मायूसी से बोला… ‘‘ तो बोलो ना डॉक्टर क्या करूं ?’’

वो फिर बाहर झांक कर देखने लगी कि कहीं कोई पैशेन्ट तो नहीं आ गया. कोई नहीं था…फिर वो बोली.
‘‘ सुनो… जब भी ऐसा हो… तो…’’
‘‘ कैसा हो डॉक्टर ?’’ मैंने पूछा.
‘‘ मतलब जब भी इरेक्शन हो… ’’
‘‘ इरेक…. क्या कहा ?’’
‘‘ यानी जब भी …. वो … तन जाए…तो…. तुम मास्टरबेट कर लेना…’’ वो फिर यहां वहां देखने लगी.

‘‘ क्या कर लेना…?’’ मैंने हैरत से कहा… ‘‘ देखिए डॉक्टर, मैं इतना पढ़ा लिखा नहीं हूं… ये मेडिकल शब्द मेरी समझ में नहीं आते… ’’
वो सोचने लगी और फिर बोली… मास्टरबेट यानी…यानी हस्त-मैथुन.’’
मैं फिर आश्चर्य से उसे देखने लगा….‘‘ क्या ? ये क्या होता है ?? ’’
‘‘ अरे तुम इतना भी नहीं जानते ? ’’ वो झुंझला कर बोली.

मैं अपने माथे पर उंगली ठोंकता हुआ सोचने के अंदाज़ में बोला… ‘‘ कोई एक्सरसाइज़ है क्या ?’’

वो मुस्कुराने लगी और बोली… ‘‘ हां, एक तरह की एक्सरसाइज़ ही है… ’’

‘‘ अरे डॉक्टर’’ मैंने कहा… ‘‘ अब दुकान में कहां कसरत वसरत करूं. ’’
वो हंसने लगी और बोली… ‘‘ क्या तुम सचमुच मास्टरबेट नहीं जानते ?’’

‘‘ नहीं डॉक्टर ’’
‘‘ क्या उम्र है तुम्हारी?’’

‘‘३० साल’’
‘‘ अब तक मास्टरबेट नहीं की?’’

‘‘ आप सही तरह से बताइए तो सही, कि ये आखिर है क्या?’’

‘‘ अरे जब… ’’ वो फिर झेंप गई और बग़लें झांकने लगी और फिर अचानक उसे कुछ याद आया और वो झट से बोली… ‘‘ हां याद आया… मूठ मारना… क्या तुमने कभी मूठ नहीं मारी… ’’

मैं सोचने लगा… और फिर कहा… ‘‘ नहीं, मैं अहिंसावादी हूं… किसी को मारता नहीं.’’

‘‘ पागल हो तुम… ’’ वो फिर हंस पड़ी…. ‘‘ या तो तुम मुझे उल्लू बना रहे हो… या सचमुच दीवाने हो.’’

मैंने फिर अपने चेहरे पर दुखों का पहाड़ खड़ा कर लिया. वो मुझे ग़ौर से देखने लगी. शायद ये अंदाज़ा लगाने की कोशिश कर रही थी कि मैं सच बोल रहा हूं या उसे बेवकूफ बना रहा हूं.

फिर वो गंभीर हो कर बोली… ‘‘ ये बताओ, जब तुम्हारा पेनिस खड़ा हो जाता है और तुम अकेले में होते हो, बाथरूम वगैरह में…या रात को बिस्तर पर… तो तुम उसे शांत करने के लिए क्या करते हो?’’

‘‘ शांत करने के लिए???’’

‘‘ हां…शांत करने के लिए.’’

‘‘ मैं आंटी से कहता हूं कि वो मेरे लिंग को अपने मुंह में ले ले और ख़ूब ज़ोर ज़ोर से चूसे…’’

वो थूक निगलते हुए बोली… ‘‘ आंटी… आंटी कौन ?’’

‘‘ मेरे घर की मालकिन… मैं उनके घर में ही पेइंग गेस्ट के तौर पर रहता हूं.’’

‘‘ अरे, इतनी बड़ी दुकान है तुम्हारी…. और पेइंग गेस्ट ?’’

‘‘ असल में ये दुकान भी उन ही की है…. मैं तो उसे संभालता हूं…’’
‘‘ पर अभी तो तुमने कहा था कि तुम उस दुकान के मालिक हो… ’’

‘‘ एक तरह से मालिक ही हूं.... आंटी का और कोई नहीं है.... दुकान की सारी जिम्मेदारी मुझे ही सौंप दी है उन्होने... ’’

‘‘ तो वो.... मतलब वो तुम्हें शांत करती हैं...?’’

‘‘ हां, वो मेरे पेनिस को अपने मुंह में ले कर बहुत जोर जोर से रगड़ती हैं और चूस चूस कर सारा पानी निकाल देती हैं.... और कभी कभी मैं....’’

‘‘ कभी कभी.... ?’’ वो उत्सुकता से बोली.

‘‘ कभी कभी मैं उन्हें....’’ मैं रुक गया. वो बेचैनी से मुझे देखने लगी.
मैंने बात जारी रखी.... ‘‘ मैं उन्हें ख़ुश भी करता हूं.’’

‘‘ कैसे ?’’ वो धीरे से बोली.
मैं इत्मीनान से बोला.... ‘‘ आंटी को मेरे लिंग का साइज़ बहुत पसंद है... और जब मैं अपना लिंग उनकी योनी में डालता हूं... तो वो मेरा सारा किराया माफ कर देती हैं.’’

मैंने देखा कि डॉक्टर ऊषा हलके हलके कांप रही है. उसके होंठ सूख रहे हैं.

मैंने एक तीर और छोड़ा....‘‘ ग्यारह इंच का लिंग पहले उनकी योनी में पूरी तरह नहीं जाता था....लेकिन आजकल आसानी से जाने लगा है.... अब वो बहुत ख़ुश रहती है मुझ से.... और उसकी एक ख़ास वजह भी है....!’’

‘‘ क्या वजह है ?’’ डॉक्टर की आंखों में बेचैनी थी.

‘‘ मैं उन्हें लगभग आधे घंटे तक .... ’’ मैंने अपनी आवाज़ को धीमा कर लिया और बोला...
‘‘ चोदता रहता हूं... ’’

डॉक्टर अपनी कुर्सी से उठ गई और बोली... ‘‘ अच्छा तो ... तुम अब जाओ... ’’

‘‘ और मेरा इलाज ???’’

‘‘ इलाज...?? इलाज वही.... आंटी.’’ वो मुस्कुराई.

‘‘ दुकान में ??’’

‘‘ मैंने कब कहा कि दुकान में… घर पर…’’

‘‘ दुकान छोड़ कर नहीं जा सकता….और वैसे भी आजकल आंटी यहां नहीं हैं… बैंगलोर गई हुई हैं. ’’

‘‘ तो ऐसा करो… सुनो… अ… ’’

मैं उसे एक टक देख रहा था.
वो बोली… ‘‘ देखो…’’
मैंने कहा… ‘‘ देख रहा हूं… आप आगे भी तो बोलिए.’’
‘‘ हं….एक काम करो.. जब भी तुम्हारा पेनिस खड़ा हो जाए…. तो तुम मास्टरबेट कर लिया करो…और मास्टरबेट क्या होता है वो भी बताती हूं… ’’

वो दरवाज़े की तरफ़ देखने लगी, जहां कंपाउंडर खड़ा किसी से बात कर रहा था. वो मेरी तरफ़ देख कर धीरे से बोली… ‘‘ अपने पेनिस को अपने हाथों में ले कर मसलने लगो…. और तब तक मसलते रहना, जब तक कि सारा पानी न निकल जाए और तुम्हारा पेनिस शांत न हो जाए.’’

मैंने अपने सर पर हाथ मारा और कहा… ‘‘ अरे मैडम…ये ग्यारह इंच का कबूतर ऐसे चुप नहीं होता. मैंने कई बार ये नुस्खा आजमाया है…. एक एक घंटा लग जाता है, तब जा कर पानी निकलता है.’’

वो मुंह फाड़ कर मुझे देखने लगी. उसकी आंखों में मुझे लाल लहरिए से दिखने लगे.
‘‘ तुम झूठ बोलते हो…. ’’

‘‘ इसमें झूठ की क्या बात है….? ये कोई अनहोनी चीज़ है क्या ?’’

‘‘ मुझे यकीन नहीं होता कि कोई आदमी इतनी देर तक… ’’

‘‘ आपको मेरी किसी भी बात पर यकीन नहीं आ रहा है… मुझे बहुत अफसोस है इस बात का…’’
मैंने ग़मगीन लहजे में कहा. फिर कुछ सोच कर मैंने कहा…

‘‘ आपके पति कितनी देर तक सेक्स करते हैं ?’’
उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया और वो कुछ न बोली… मैंने फिर पूछा तो वो बोली…

‘‘ बस तीन मिनट !’’

‘‘ क्या ?????’’ अब हैरत करने की बारी मेरी थी.

‘‘ इसीलिए तो कह रही हूं…’’ वो बोली, ‘‘ कि तुम आधे घंटे तक कैसे टिक सकते हो ? और मास्टरबेट एक घंटे तक ??’’

फिर थोड़ी देर ख़ामोशी रही और वो बोली…. ‘‘ मुझे तुम्हारी किसी बात पर यकीन नहीं है… न ग्यारह इंच वाली बात… और न ही एक घंटे, आधे घंटे वाली बात..’’

मैं बोला…‘‘ तो आप ही बताइए कि मैं कैसे आपको यकीन दिलाऊं ?’’

वो चुप रही. मैं उसे एक टक देखता रहा. फिर वो अजीब सी नज़रों से मुझे देखती हुई बोली…
‘‘ मैं देखना चाहती हूं…’’

मैंने पूछा… ‘‘ क्या … क्या देखना चाहती हैं ?’’

वो धीरे से बोली… ‘‘ मैं देखना चाहती हूं कि क्या वाकई तुम्हारा पेनिस ग्यारह इंच का है… बस ऐसे ही.. अपनी क्योरोसिटी को मिटाने के लिए… ’’

मुझे तो मानो दिल की मुराद मिल गई… मैंने कहा… ‘‘ तो …उतारूं पैन्ट…?’’

वो जल्दी से बोली… ‘‘नहीं, नहीं… यहां नहीं… कंपाउंडर है और शायद कोई पैशेन्ट भी आ गया है…’’

‘‘ फिर कहां ?’’ मैंने पूछा.

‘‘ तुमने कहा था कि तुम्हारी आंटी घर पर नहीं है… तो … क्या मैं… ?’’

‘‘ हां हां, क्यों नहीं… ’’ मैं अपनी ख़ुशी को दबाते हुए बोला. ‘‘ तो कब? ’’

‘‘ बस क्लिनिक बंद करके आती हूं… ’’

‘‘ मैं बाहर आपका इंतज़ार करता हूं…’’ मैंने कपकपाती हुई आवाज़ में कहा और क्लिनिक से बाहर आ गया. फ़ौरन अपनी दुकान पर गया और नौकर से कहा कि वो लंच के लिए दुकान बंद कर दे और दो घंटे बाद खोले. और मैं क्लिनिक और दुकान से कुछ दूर जा कर खड़ा हो गया. मेरी नज़रें क्लिनिक के दरवाज़े पर थीं.

आख़िरी पेशेन्ट को निपटा कर डॉक्टर ऊषा बाहर निकली. कंपाउंडर को कुछ निर्देश दिए और दाएं बाएं देखने लगी. फिर उसकी नज़र मुझ पर पड़ी.

नज़रें मिलते ही मैं दूसरी तरफ़ देखने लगा. उसने भी यहां वहां देखा और फिर मेरी तरफ़ आने लगी. जब वो करीब आई तो मैं बिना उसकी तरफ़ देखे आगे बढ़ा. वो मेरे पीछे पीछे चलने लगी.

जब मैं अपने फ़्लैट का दरवाज़ा खोल रहा था तो मुझे अपने पीछे आहट सी महसूस हुई. मुड़ कर देखा तो डॉक्टर ही थी.

जल्दी से दरवाज़ा खोल कर मैं अंदर आया. वो भी झट से अंदर घुस गई. मैंने सुकून की सांस ली और डॉक्टर की तरफ़ देखा. मुझे उसके चेहरे पर थोड़ी सी घबराहट नज़र आई. वो किसी डरे हुए कबूतर की तरह यहां वहां देख रही थी.

मैंने उसे सोफ़े की तरफ़ बैठने का इशारा किया. वो झिझकते हुए बोली… '' देखो, मुझे अब ऐसा लग रहा है कि मुझे यहां इस तरह नहीं आना चाहिए था… पता नहीं, किस भावना में बह कर आ गई.''

मैंने कहा, '' अब आ गई हो, तो बैठो…जल्दी से चेक-अप कर लो और चली जाओ.''

''हां. हां.'' उसने कहा और सोफ़े पर बैठ गई.

मैंने दरवाज़ा बंद कर लिया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए. वो भी मुझे देखने लगी.

''कुछ पीते हैं… '' मैंने कहा. और इससे पहले कि वो कुछ कहती, मैं किचन की तरफ़ बढ़ा.

मैंने सॉफ़्ट ड्रिंक की बोतल फ्रिज से निकाली और फिर ड्रॉइंग रूम में पहुंच गया.

वो बोली… '' कहीं शराब तो नहीं.''

मैंने उसे सॉफ़्ट ड्रिंक की अनखुली बोतल दिखाई और फिर उसके बाज़ू में बैठ गया. वो दूसरी तरफ थोड़ा सा खिसक गई.

अचानक उसकी नज़र सामने टीपॉय पर पड़ी एक किताब पर पड़ी, जिसके कवर पेज पर एक नंगी लड़की की तस्वीर थी. मैंने कहा, मैं अभी आता हूं… और फिर किचन की तरफ़ चला गया. किचन की दीवार की आड़ से मैंने चुपके से देखा तो मेरा अंदाज़ा सही निकला. वो किताब उसके हाथों में थी. किताब के अंदर नंगी औरतों और मर्दों की तस्वीरें देख कर उसके माथे पर पसीना आ गया. ये बहुत बढ़िया किताब थी. चुदाई के इतने क्लासिकल फ़ोटो थे उसमें कि अच्छे अच्छों का लंड खड़ा हो जाए. और औरत देख ले तो उसकी सोई चूत जाग उठे. मैंने देखा कि उसके हाथ कांप रहे थे और वो जल्दी जल्दी पन्ने पलटा रही थी.

मैं दबे कदमों से उसके करीब आया और फिर अचानक मुझे अपने पास पा कर वो सटपटा गई. उसने जल्दी से किताब टीपॉय पर रख दी.

मैं मुस्कुराता हुआ उसके पास बैठ गया. वो बोली… ‘‘ कितनी गंदी किताब !’’

मैं बोला… ‘‘ आप तो डॉक्टर हैं, आपके लिए ये कोई नई चीज़ थोड़े ही है… ’’

उसकी नज़र अब भी किताब पर थी. मैंने किताब उठाई और उसके वरक पलटने लगा. वो चोर नज़रों से देखने लगी. मैं उसके करीब थोड़ा और खिसक आया.

अब जो पन्ना मैंने पलटा था उसमें एक आदमी अपना बड़ा सा लंड एक औरत की गांड की दरार पर घिस रहा था. उसे देख कर डॉक्टर हिल सी गई.

मैंने अपना एक हाथ डॉक्टर के कंधों पर रखा. उसने कोई आपत्ति नहीं की. फिर धीरे से मैंने अपना हाथ उसके सीने की तरफ़ बढ़ाया. वो कांपने लगी.

धीरे धीरे मैं उसकी छातियों को सहलाने लगा. उसने आंखें बंद कर ली. उस वक़्त वो साड़ी और ब्लाउज़ पहने हुई थी. मेरी उंगलियां उसके निप्पल को ढूंढ़ने लगीं. उसके निप्पल तन कर सख़्त हो चुके थे.

मैंने उसके निप्पलों को सहलाना शुरू किया. वो थरथराने लगी.

अब मेरा हाथ नीचे की तरफ़ बढ़ने लगा. वो नाभि के नीचे साड़ी बांधती थी. जैसे ही मेरा हाथ उसकी नंगी कमर पर पहुंचा वो हवा से हिलती किसी लता की तरह कांपने लगी. अब मेरी एक उंगली उसकी नाभि के छेद को कुरेद रही थी. वो सोफ़े पर लगभग लेट सी गई.

मैंने अपने हाथ उसकी टांगों की तरफ़ बढ़ाए. साड़ी को थोड़ा ऊपर किया और मेरी आंखें चमक उठीं. उसकी गोरी ख़ूबसूरत टांगें जिन पर बालों का नामोनिशान नहीं था, मुझे मदहोश करने लगीं.

मैंने साड़ी को थोड़ा और ऊपर किया. अब उसकी जांघें नज़र आने लगीं. जैसे संगे-मरमर से तराशी हुईं. मैंने अपने कांपते हाथ उसकी जांघों पर फेरे तो वो करवटें बदलने लगी. मुझे ऐसा लगा जैसे मैं पाउडर लगे कैरम बोर्ड पर हाथ फेर रहा हूं. थोड़ा और आगे बढ़ा तो टांगों की सरहद से जा टकराया. पैन्टी को छुआ तो गीलेपन का एहसास हुआ. उंगलियों ने असली जगह को टटोलना शुरू किया. चिपचिपाती चूत अपने गर्म होने का अनुभव करा रही थीं. मैंने बेचैन हो कर पूरी साड़ी ऊपर कर दी. पिंक कलर की पैन्टी थी उसकी, जो पूरी तरह गीली हो चुकी थी.

मैंने आहिस्ते से पैन्टी को नीचे खिसका दिया.

ओह गॉश !!! इतनी प्यारी और ख़ूबसूरत चूत मैंने ब्लू फ़िल्मों में भी नहीं देखी थी. हलके हलके रोएं उसकी ख़ूबसूरती में इज़ाफ़ा कर रहे थे.

अब सहन नहीं हो रहा था. मैंने दीवानों की तरह उसकी साड़ी उतारी और पैन्टी को अलग करके दूर फैंक दिया. अब वो नीचे से पूरी नंगी थी. उसकी आंखें बंद थीं. मैंने संभल कर उसकी दोनों टांगों को उठाया और उसे अच्छी तरह से सोफ़े पर लिटा दिया. वो अपनी टांगों को एक दूसरे में दबा कर लेट गई. अब उसकी चूत नज़र नहीं आ रही थी. सोफ़े पर इतनी जगह नहीं थी कि मैं भी उसके बाज़ू में लेट सकता. मैंने अपना एक हाथ उसकी टांगों के नीचे और दूसरा उसकी पीठ के नीचे रखा और उसे अपनी बांहों में उठा लिया. उसने ज़रा सी आंखें खोलीं और मुझे देखा और फिर आंखें बंद कर लीं.

मैं उसे यूं ही उठाए बेडरूम में ले आया. बिस्तर पर धीरे से लिटा कर उसके पास बैठ गया. उसने फिर उसी अंदाज़ में दोनों टांगों को आपस में सटा कर करवट ले ली. मैंने धीरे से उसे अपनी तरफ़ खिसकाया और उसे पीठ के बल लिटाने की कोशिश करने लगा. वो कसमसाने लगी. मैंने अपना हाथ उसकी टांगों के बीच में रखा और पूरा ज़ोर लगा कर उसकी टांगों को अलग किया. गुलाबी चूत फिर मेरे सामने थी. मैंने थोड़ा और उसकी टांगों को फैलाया. चूत और स्पष्ट नज़र आने लगी. अब मरी उंगलियां उसके clitoris (भगशिश्न) को सहलाने के लिए बेताब थीं. धीरे से मैंने उस अनार दाने को छुआ तो उसके मुंह से सिस्कारी सी निकली. हलके हलके मैंने उसके दाने को सहलाना शुरू किया, वो फिर कसमसाने लगी.

थोड़ी देर मैं कभी उसके दाने को तो कभी उसकी चूत की दरार को सहलाता रहा. फिर मैं उसकी चूत पर झुक गया. अपनी लंबी ज़बान निकाल कर उसके दाने को टच किया तो वो चीख़ पड़ी और उसने फिर अपनी टांगों को समेट लिया. मैंने फिर उसकी टांगों को अलग किया और अपने दोनों हाथ उसकी जांघों में यूं फंसा दिए कि अब वो अपनी टांगें सटा नहीं सकती थी. मैंने अपना पूरा सर उसकी चूत पर रख दिया. अब वो हिल भी नहीं सकती थी. मैंने चपड़ चपड़ उसकी चूत को चाटना शुरू किया तो वो किसी कत्ल किए हुए बकरे की तरह तड़पने लगी. मैंने अपना काम जारी रखा और उसकी चार इंच की चूत को पूरी तरह चाट चाट कर मस्त कर दिया.

वो ज़ोर ज़ोर से सांसें ले रही थी. उसकी चूत इतनी भीग चुकी थी कि ऐसा लग रहा था, शीरे में जलेबी मचल रही हो.

उसने आंखें खोली और यूं देखने लगी, मानो कह रही हो… ख़ुदा के लिए अपना लंड निकालो और मुझे सैराब कर दो.

मैंने उसकी आंखों की इलतिजा को ठुकराना मुनासिब नहीं समझा और अपनी पैन्ट उतार दी. फिर मैंने अपनी शर्ट भी उतारी. इससे पहले कि वो मेरे लंड को देखती, मैं उस पर झुक गया और उसके पतले पतले होंठों को अपने मुंह में ले लिया. उसके होंठ गुलाब जामुन की तरह गर्म और मीठे थे और वैसे ही रसीले भी.

पांच मिनट तक मैं उसके रस भरे होंठों को चूसता रहा. फिर मैंने अपनी टांगों से उसकी टांगों को फैलाया और उसकी जांघों के बीच में बैठ गया. अब मेरा तमतमाया हुआ लंड उसकी चूत की तरफ़ किसी अजगर सांप की तरह दौड़ पड़ने को बेताब था. अब उसने फिर आंखें बंद कर लीं.

मैंने उसकी चूत के दरारों पर अपने लंड का सुपाड़ा रखा तो वो फिर कसमसाने लगी. मुझे आश्चर्य भी हो रहा था कि शादीशुदा होते हुए भी वो ऐसे रिएक्ट कर रही थी जैसे ये उसकी पहली चुदाई हो.

मैंने अपने लंड के सुपाड़े से उसकी दरार पर घिसाई शुरू कर दी. चूत के अंदर से सफ़ेद सफ़ेद रस निकलने लगा. पता नहीं कब घिसाई करते करते लंड चूत के अंदर दाख़िल हो गया… इतने स्मूदनेस के साथ, इतनी सफ़ाई से, इतनी चिकनाई से कि लगा सारे शरीर में बिजली की लहर दौड़ गई हो.

उसने अपने दोनों हाथों से मेरी कमर थाम ली. मैं उसकी चूत में धक्के मारने की कोशिश कर रहा था, और वो मुझे ऐसा करने नहीं दे रही थी. उसने मुझे कुछ यूं थाम रखा था कि मेरा लंड उसकी चूत में अंदर तक धंसा हुआ था. मैंने अपनी कमर हिला हिला कर धक्के मारने जैसा अंदाज़ अपनाया. फिर मैं अपने शरीर के निचले हिस्से को यूं गोल गोल घुमाने लगा, जैसे कोई चाय के प्याले में चीनी घोल रहा हो. मेरा लंड उसकी चूत में दही बिलो रहा था. ये अनुभव भी बड़े मज़े का था. उसे भी अच्छा लगा. और वो भी अपनी गांड को नीचे से थोड़ा उचका कर गोल गोल घुमाने लगी. मेरा लंड उसकी चूत में गोल गोल घूम रहा था.

उसने कस कर मुझे पकड़ लिया और ख़ुद ही मेरे होंठों को अपने मुंह में ले लिया. फिर वो मेरे होंठों को किसी कैन्डी की तरह चूसने लगी. मेरा लंड नीचे बराबर उसकी चिकनी चूत में गोल गोल घूम रहा था. फिर उसने अपने दोनों हाथ ढीले कर दिए और मैंने मक्खन बिलोना बंद किया. अब बारी थी धक्के मारने की.

मैं उसकी चूत में अपने लंड को यूं आगे पीछे कर रहा था कि मेरा लंड पूरी तरह उसकी चूत से बाहर आ जाता और फिर एक झटके से चूत की गहराई में समा जाता. हर झटके में वो चीख़ पड़ती.

लंड उसकी चूत में अंदर जा रहा था, बाहर आ रहा था. अंदर बाहर, अंदर बाहर…. उसकी चूत मेरे लंड को इतनी स्वादिष्ट महसूस हो रही थी कि मुझे लग रहा था, बरसों के भूखे को खीर मिल गई हो.

वो हर झटके में सिस्कारी भर रही थी. मैंने उससे कपकपाती हुई आवाज़ में पूछा…‘‘ लंड का रस निकलने वाला है…. कहां निकालूं… अंदर या बाहर…. ?’’

वो भी कपकपाती हुई आवाज़ में बोली…. ‘‘ अंदर अंदर !’’

फिर दो तीन धक्के में ही लंड का गर्मा गरम ‘कम’ निकल कर उसकी चूत में भीतर तक चला गया. मस्त गर्म वीर्य के चूत में जाते ही वो भी ढेर हो गई. एक ज़बरदस्त सिस्कारी के साथ उसने मुझे एक तरफ़ ढकेला और

पेट के बल दोनों टांगें फैला कर लंबी हो गई. उसकी सांसें फूल रही थीं.

मैं भी दूसरी तरफ़ चित लेट गया और छत पर चलते फ़ैन को तकने लगा. शरीर एकदम हलका हो गया था.

धीरे धीरे उसकी सांसें बहाल हुईं और मुझे लगा जैसे वो सो गई हो. मैं चुपके से उठा, देखा तो वो लंड हिला देने वाले अंदाज़ में पेट के बल लेटी हुई थी. उसकी उभरी हुई गांड रेगिस्तान के किसी गर्म टीले की तरह सुंदर दृश्य पेश कर रही थी. मेरे तन बदन में फिर आग लग गई. मैंने उसकी उभरी हुई चूतड़ पर हाथ फेरा तो वो हलके से चौंक गई, लेकिन कुछ नहीं कहा. मैंने उसकी गांड के दोनों भागों को सहलाना शूरू किया. मेरी हथेलियों से लुत्फ़ की तरंगे निकल कर मेरे रोम रोम को मदमस्त कर रही थीं. धीरे धीरे मैं उसकी गांड की खाई में उतरना चाहता था. मैंने उसके तरबूज़ के दोनों फांकों को अपनी उंगलियों से फैलाया तो गांड का छेद नज़र आया, जो इतना चुस्त दुरुस्त था कि मेरा लंड तन कर इस तरह खड़ा हो गया जैसे कोई सांड गाय को देख कर बैठे बैठे झट से खड़ा हो जाता है. अपनी उंगली मैंने उसके गांड के सुराख पर रखी और धीमे धीमे उसे सहलाने लगा. वो तड़पने लगी.

अब मुझसे बरदाश्त नहीं हो रहा था. मैंने बेड की दराज़ खोली और के वाई जैली का ट्यूब निकाला. चिकनी जैली मेरी उंगलियों में थी. मैंने ख़ूब अच्छी तरह अपने लंड को चिकना किया और ढेर सारी जैली उसकी गांड के छेद पर उंडेली. मुझे ये देख कर अच्छा लग रहा था कि वो किसी तरह से भी प्रोटेस्ट नहीं कर रही थी. वो पेट के बल लंबी लंबी लेटी हुई थी और मैं उसकी गोल गुदाज़ नर्म गांड को देख देख कर अपने होंठों पर ज़बान फेर रहा था. जब उसकी गांड का छेद पूरी तरह ल्युब्रिकेटेड हो गया और मेरी उंगली आसानी से अंदर बाहर होने लगी तो मैंने अपना लंड उसकी गांड के दरार पर रखा. उसने फिर कोई आपत्ति ज़ाहिर नहीं की. शायद उसे मालूम नहीं था कि गांड मरवाना किसे कहते हैं. उसकी बे ख़बरी का मैंने बहुत फ़ायदा उठाया और धीरे से अपनें लंड का सुपाड़ा उसकी गांड के छेद पर रख कर पुश किया. वो कसमसाई. मैंने उसकी गांड के दोनों फांकों को अपने हाथों से चौड़ा कर दिया था, जिससे उसकी गांड का सुराख साफ नजर आ रहा था.

मैंने फिर धीरे से अपना लंड उसके छेद में पुश किया. वो दर्द से तिलमिलाई और इससे पहले कि वो ग़ुस्सा हो कर उठ जाती, मेरा चिकना लंड उसकी चिकनी गांड में यूं घप से घुस गया जैसे छुरी मक्खन में धंस जाती है. वो ज़ोर से चिल्लाई और इतने ज़ोर से झटके देने लगी कि मुझे लगा मैं अभी गिर जाऊंगा. मगर मैंने मज़बूती से बेड का ऊपरी सिरा पकड़ लिया था और उसे हिलने नहीं दे रहा था. उसने अपनी गांड से मेरे लंड को निकालने की पूरी कोशिश की, मगर कामयाब नहीं हुई. मेरा लंड उसी तरह उसकी गांड के अंदर था. धीरे धीरे वो शांत हो गई और कुछ देर तक मैं उसके ऊपर यूं ही पड़ा रहा.

मेरा लंड अब भी उसकी गांड में पूरी तरह धंसा हुआ था. वो चुप चाप पड़ी रही. अब मैंने धीरे धीरे अपने लंड को थोड़ा बाहर खींचा, वो सिसकने लगी. लंड चूंकि बहुत चिकना था, इसलिए सरलता से बाहर आ रहा था. मैंने लंड को पूरा बाहर नहीं निकाला और एक चौथाई हिस्सा बाहर आते ही मैंने फिर धीरे से उसे उसकी गांड में पेल दिया. वो थरथराई, मगर कुछ कहा नहीं.

अब धीरे धीरे मेरा काम चालू हो गया. मैं अपने लंड को उसकी गांड में अंदर बाहर करने लगा. उसकी गांड का उभरा चिकना भाग मेरी जांघों से टकरा कर मुझे अजीब सा एहसास दिला रहा था. जो मज़ा चूत में लंड अंदर बाहर करने का है, उसके सौ गुना मज़ा गांड मारने में है, ये एहसास मुझे पहली बार हुआ.

मगर मुझे ये अनुभव करके थोड़ा अफसोस जरूर हुआ कि गांड मारने में बहुत जल्द झड़ जाने का डर रहता है. जहां मैं चूत में आधे घंटे तक हल चला सकता हूं, वहीं गांड में दस मिनट से ज़्यादा टिक ही नहीं सकता. बस, दसवें मिनट में ही झर झर करके लंड का सारा रस बाहर आ गया और उसकी गांड पूरी तरह से चिपचिपी हो गई. मुझे एक बात और पता चली कि गांड मारने के बाद झड़ने से वीर्य की एक एक बूंद निचुड़ जाती है और फिर आप अगले आधे पौने घंटे तक कुछ कर ही नहीं सकते.

वैसे भी काफ़ी टाइम हो गया था. वो उठ कर बैठ गई. शर्म से उसने अपनी नज़रें झुका ली थीं और ख़ामोश थी. मुझे लगा कि शायद गांड मारने से वो दुखी है. मैंने उससे पूछा… ‘‘क्या तुम्हें बुरा लगा, कि मैंने तुम्हारी गांड….?’’

वो बोली…‘‘ नहीं, नहीं, इन फ़ैक्ट, मुझे बाद में बहुत अच्छा लगा….’’
मेरी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं था. मैंने उन औरतों को दिल ही दिल में बुरा भला कहा, जो Anal Sex से पता नहीं क्यों बिचकती हैं.

मैंने देखा कि वो मेरे लंड को बड़े ग़ौर से देख रही थी. फिर उसने मुझे घूरते हुए कहा, ‘‘ तुम तो कह रहे थे कि ये ग्यारह इंच का है, मुझे तो ७-८ इंच से ज़्यादा का नहीं लगता.’’

अब बग़लें झांकने की मेरी बारी थी. मैंने अपनी जान बचाने की ख़ातिर कहा, ‘‘ तुम्हें प्यास लगी होगी, पीने के लिए कुछ ले आता हूं… ’’ ये कह कर मैं किचन की तरफ़ भागा.